लेखक - बिमल चटर्जी

• चित्रांकन - त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट.

अंत में जग्गू के सभी साथी मैदान छोड़कर भाग खड़े हुये...

...और आनन्द ने जग्गू को काफी अपमानित किया
हा-हा-हा!
बदला लूंगा, जरूर बदला लूंगा!

और कुछ दिनों बाद जग्गू उस दिन हुये अपने अपमान का बदला लेने के लिये उस इलाके के एक नामी बदमाश मंगल दादा से मदद लेने के लिये चल पड़ा।
पूरी कहानी का भरपूर मनोरंजन उठाने के लिये पढ़ें, "राम-रहीम और सदाबहार देवानन्द" व "हवलदार गेंडाराम और अनोखा मदारी"

अब आगे पढ़ें-
मंगल दादा इस समय बदलू चाय वाले के यहां मिलेगा। वहीं वह चोरी-छिपे शराब बेचता है।

कुछ देर बाद एक निम्न श्रेणी की बस्ती में प्रविष्ट होकर...
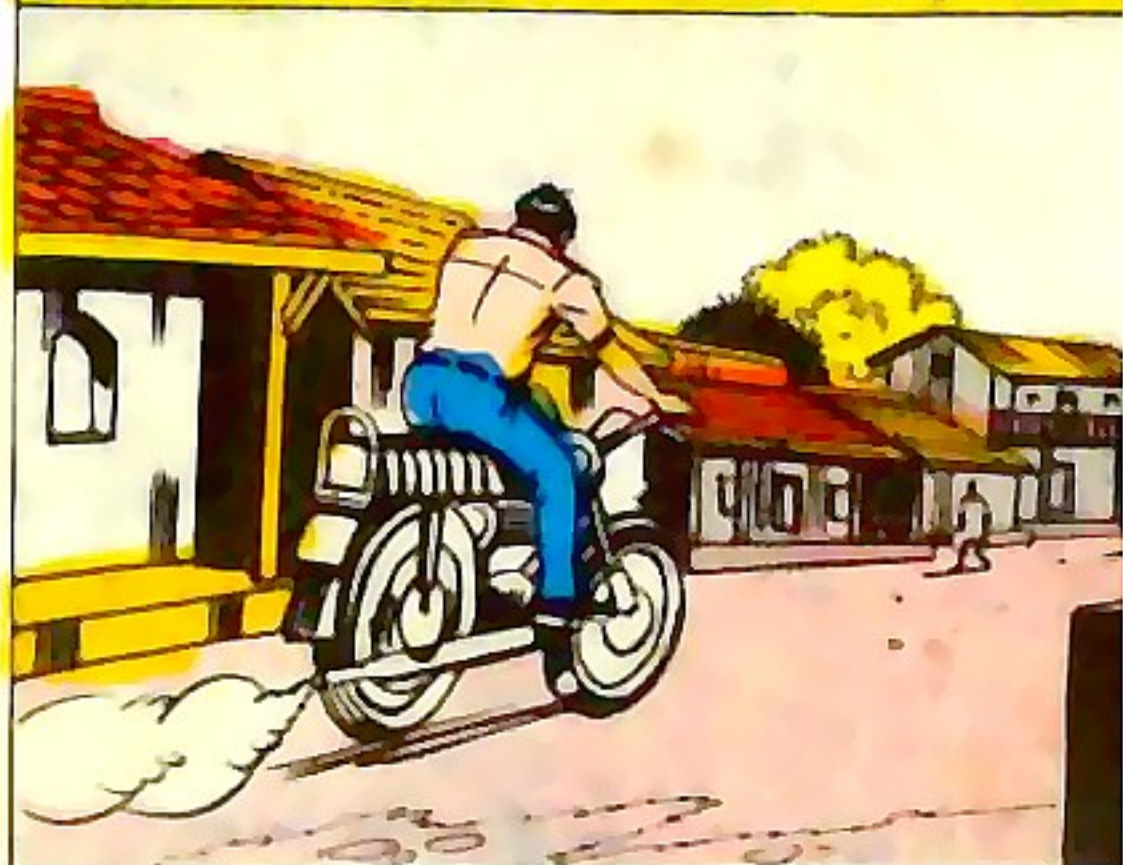
...जू ने अपनी मोटरसाइकिल बदलू चाय वाले की दुकान के सामने रोक दी।
बदलू चायवाला
क्या चाहिये बाबू? क्या चाय बनाऊं?
नहीं, मुझे सिर्फ मंगल दादा से मिलना है।

लगता है, मंगल दादा का कोई असामी है।

भीतर चले आओ। ऊपर के केबिन में तुम्हें मंगल दादा मिल जायेंगे।
ठीक है।

...जू भीतर प्रविष्ट हुआ...

और सीढ़ियां चढ़ता हुआ...

... जैसे ही ऊपर बने लकड़ी के केबिन में प्रविष्ट हुआ –
राम-राम मंगल दादा!
अरे, तुम!
हां मंगल दादा! मैं तुम्हारे पास एक जरूरी काम से आया हूं।
अरे, पहले बैठो तो बबुआ! काम की बातें फिर भी हो जायेंगी। हैं-हैं-हैं!
हां, अब बताओ बबुआ कि तुम हमारे पास किस जरूरी काम से आये हो?
तुम्हें चार लड़कों के हाथ-पांव तोड़ने हैं।
अरे बस! हम तो समझे थे कि तुम किसी बहुत ही बड़े काम से हमारे पास आये हो...
... खैर, तुम्हारा काम हो जायेगा, लेकिन फीस पांच हजार रुपये होगी।
मुझे मंजूर है।

ठीक है। तो बताओ वे चारों लड़के कौन हैं, कहां रहते हैं और क्या करते हैं?
उन चारों की तस्वीरें इस लिफाफे में हैं और बाकी की जानकारी व योजना तुम्हें मैं बताये देता हूं।
फिर वह लिफाफा मंगल को सौंपने के बाद अज्जू उसे अपनी योजना बताने लगा।

सबकुछ सुनने के बाद—
बबुआ, तुम्हारी योजना तो हमारी समझ में आ गई और तुम्हारा काम भी हो जायेगा, लेकिन तुमने यह तो बताया ही नहीं कि आखिर इन छोकरों से तुम्हारी ऐसी क्या दुश्मनी हो गई कि तुम इनके हाथ-पैर तुड़वाना चाहते हो?
तुम्हें आम खाने से मतलब होना चाहिये मंगल दादा, पेड़ गिनने से नहीं

तो ठीक है बबुआ। तब तुम आम ही निकालो। हम भी पेड़ नहीं गिनना चाहते।
क्या मतलब?

अरे भाई, आम से हमारा मतलब है माल, यानी रोकड़ा।
ओह, रकम! रकम शाम तक तुम्हारे पास पहुंच जायेगी।

ठीक है। तो निश्चिन्त होकर घर जाओ और बाकी काम हमारे जिम्मे छोड़ दो।
गुड! तो मैं चलता हूं। शाम को फिर मुलाकात होगी।
अज्जू निश्चिन्त होकर अपने घर लौट गया और उसी शाम उसने मंगल दादा को पांच हजार रुपये भी पहुंचा दिये, जो उसने घर से ही चुराये थे।

अगले दिन राम-रहीम व देव-आनन्द अन्य विद्यार्थियों के साथ बसों पर सवार होकर पिकनिक पर रवाना हुये।

पिकनिक स्पॉट था सुन्दर वन जैसा खूबसूरत स्थान।
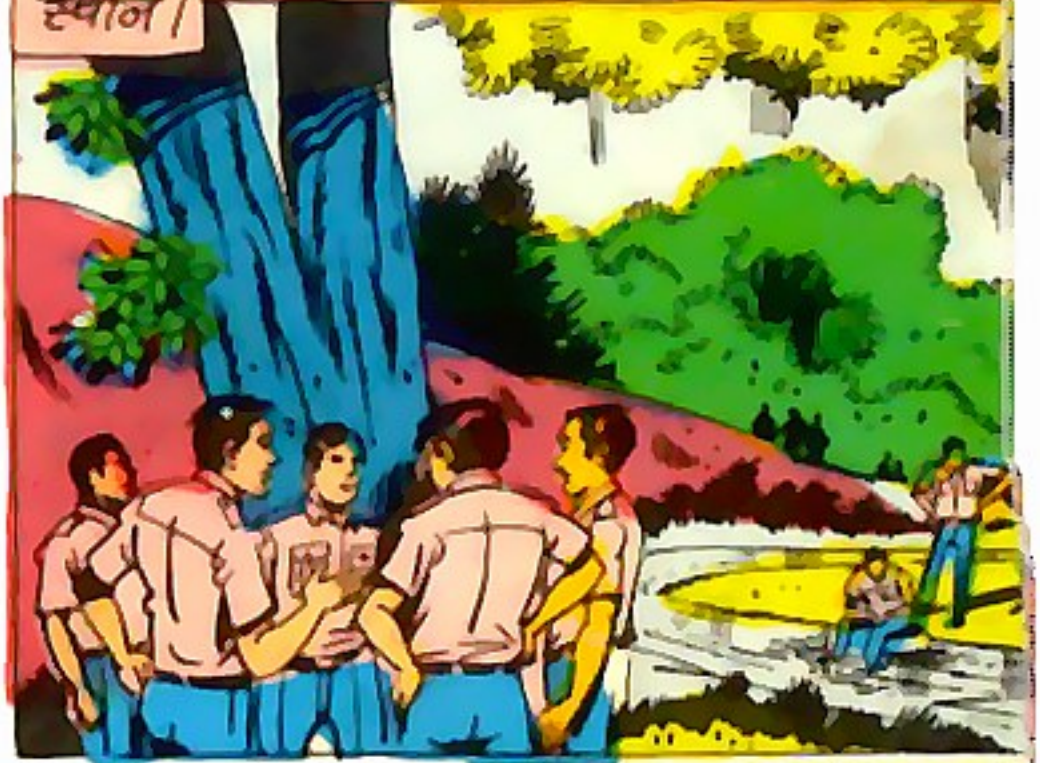
राम-रहीम और देव-आनन्द एक स्थान पर बैठे खाने-पीने का आनन्द ले रहे थे।
लो छोटे भाई, जरा हमारे भी सेण्डविच का आनन्द लो।
उंह! जिसे गधे भी खाना पसंद नहीं करते। उसे मैं भी पसंद नहीं करता।

वाह! क्या बात कही है तुमने छोटे भाई। सेण्डविच वास्तव में गधे ही नहीं खाते।
हा-हा-हा!
आनन्द का व्यंग्य सुनकर रहीम मन-ही-मन तिलमिला उठा था, लेकिन वह बोला कुछ नहीं।

सब खुश और आनन्दित हो रहे थे, लेकिन जग्गू के दिल में जैसे दुनियाभर की नफरत समाई हुई थी।
आज खूब दिल खोलकर खेल-खा लो बेटा। उसके बाद कम-से-कम तुम्हें छः महीने से पहले बिस्तर से उठने का भी अवसर नहीं मिलेगा।

वहां से वापस लौटने में उन्हें रात हो गई।
आनन्द, तुम्हें याद है न, आज का डिनर तुम्हें मेरे ही घर लेना है।
बिल्कुल याद है प्यारे...

...और मैं चाहता हूं कि आज के डिनर में बड़े भइया और छोटे भइया भी शामिल हों।
वाह! यह तो और भी अच्छा होगा।

अरे भाई, आखिर यह डिनर किस खुशी में दिया जा रहा है।
अरे हां बड़े भाई, मैं तो तुम्हें यह बताना ही भूल गया कि देव के पिता छः वर्ष बाद घर लौटे हैं। यह डिनर यह उसी खुशी में दे रहा है।

तब तो मैं जरूर चलूंगा।
लेकिन मैं नहीं जाऊंगा।

मैं जानता हूं, छोटे भाई कि तुम लड़कियों की तरह नखरे क्यों दिखा रहे हो, लेकिन मेरी एक बात ध्यान रखो छोटे भाई! जिंदादिली ही एक इंसान को बड़ा एवं खूबसूरत बनाती है।
आनन्द ठीक कह रहा है रहीम। इनकी बात मान लो।

ठीक है, राम भइया! तुम्हारी भी यही इच्छा है तो मुझे भी देव का डिनर कबूल है।
हुर्रे! यह हुई न जिंदा-दिली वाली बात।

चलो बड़े भइया, अब हम अपनी-अपनी गाड़ी स्टैण्ड से ले आयें।
हाँ, चलो

रहीम और देव वहीं रहे और राम व आनन्द स्टैण्ड की ओर बढ़ गये।

शीघ्र ही—
चलो रहीम, पीछे बैठो।
और देव, तुम मेरे पीछे बैठो।
फट... फट...
फट... फट...

रहीम व देव के सवार होते ही राम और आनन्द ने अपनी-अपनी गाड़ी बाहर की ओर दौड़ा दी।
फट... फट... फट...
फट... फट... फट...

उन्हें आता हुआ देख अप्पू की में भयानक चमक उभर आई थी।
आओ बच्चो, ईश्वर तुम्हारा भला करे, लेकिन मुझे विश्वास है कि आज वह भी तुम्हारा भला नहीं चाहेगा।
रात धीरे-धीरे गहरी होती चली जा रही थी और राम व आनन्द की मोटर साइकिलें रात के उस गहरे अंधकार को चीरती हुई इस समय एक वीराने स्थान से गुजर रही थीं कि—
जक—
अरे! वह कौन सड़क पर पड़ा है?
शायद कोई घायल है। बड़े भाई, गाड़ी रोको।
दोनों ने उस व्यक्ति के निकट पहुंचकर ब्रेक लगाये।
नीचे उतरो।
किन जैसे ही चारों मोटर साइकिलों से उतरकर उस व्यक्ति के निकट पहुंचे-
खबरदार, जैसे खड़े हो, वैसे ही खड़े रहो, वरना मेरी बेआवाज रिवाल्वर तुम्हें भी बेआवाज कर देगी।
ओह! धोखा।
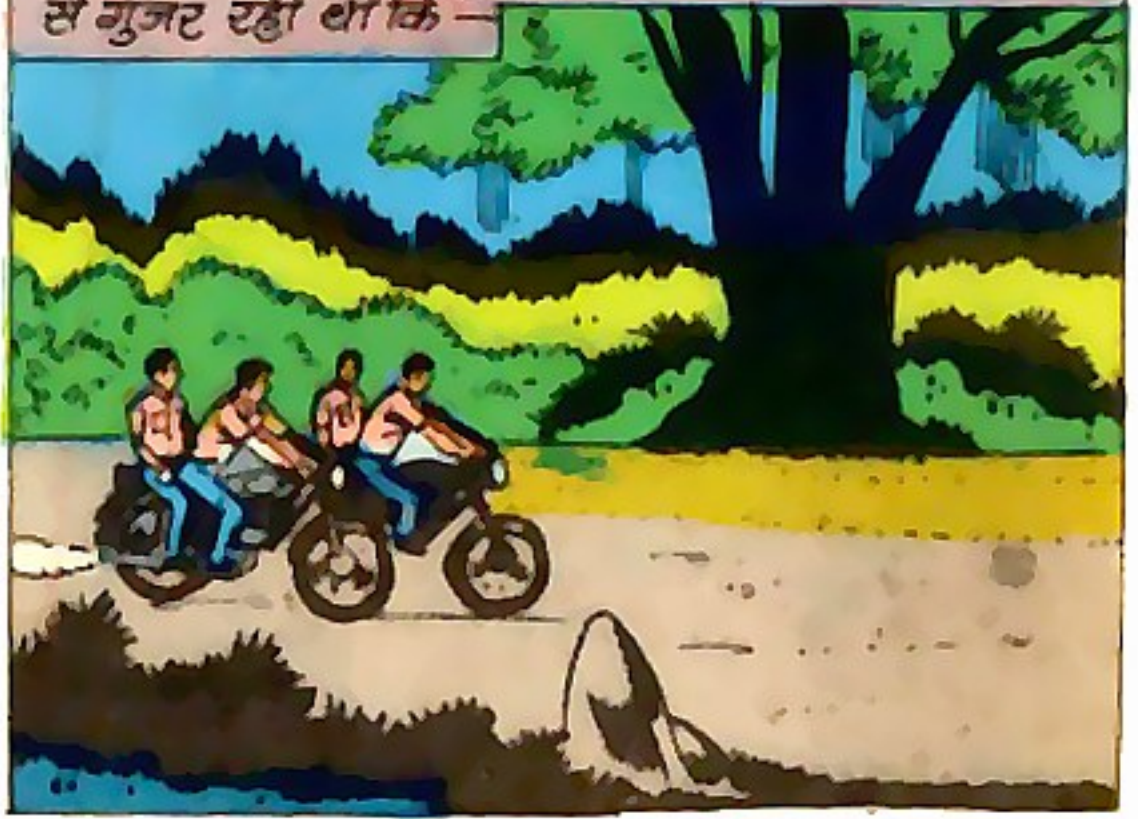
कौन हो तुम और हमसे क्या चाहते हो?

सुनो भाई, यदि तुम कोई चोर-उचक्के या उठाईगीरे हो तो हमें रिवॉल्वर दिखाने से कोई फायदा नहीं, क्योंकि इस समय जेब से हम सब फक्कड़ हैं।

तभी-
अब हाथ-पैरों से भी फक्कड़ हो जाओगे छोकरो।
ओह, आप लोग भी मौजूद हैं।

आपकी तारीफ श्रीमान? क्या आप लोग इस टकले के चेले हैं?
बकवास नहीं बबुआ, वरना हाथ-पैरों के साथ-साथ जुबान भी काट लूंगा।

ओह! यह तो किसी कसाई के खानदान से लगता है।

तुम लोग हमसे क्या चाहते हो?
सिर्फ तुम लोगों के हाथ-पैर तोड़ना चाहते हैं। घबराओ नहीं, इस मामले में हम तुम्हें ज्यादा तकलीफ नहीं होने देंगे।

ओह! कहीं इन्हें जग्गू ने नहीं भेजे?
हमारे हाथ-पैर तोड़कर तुम्हें क्या मिलेगा? भला हमसे तुम्हारी क्या दुश्मनी है?
अभी बताता

शेखू-टकलू-बिरजू, आओ, खातिरदारी शुरू करें इनकी।
अभी लो उस्ताद!

दूसरे ही पल-
उफ!
आह!
हाय!
उफ!

कुछ देर तक राम आदि उन बदमाशों के हाथों मार खाते रहे, लेकिन फिर-
बस-बस बेपेंदी के लोटो! बहुत हो चुका। अब हमारी बारी है। सम्भल जाओ।
हा-हा-हा!

लेकिन अगले ही क्षण उन सबके कहकहे उनके हलक में ही फंसकर रह गये।
उफ्फ!
हाय!
आह!

कड़ाक्
ले बेटा टकले, अब चला बे आवाज़ गोली
आई... ई... ई...

बताओ, कौन हो तुम?
ढिशुम
हाय!

क्यों बेटा, हमारे हाथ-पैर तोड़ोगे?
आई... ई... ई...
फटाक्

ले बदमाश की दुम, कर ले अपनी नानी को याद।
फटाक्
हाय! मार डाला।

...घ ही-
हां प्यारे, अब जरा प्यार से अपना नाम और पता बता दो, वरना इतने जूते मारूंगा कि तुम्हारी सात पुश्तें गंजी ही पैदा होंगी।
न... हीं... नहीं, ऐसा गजब मत करना!

तो बताओ, तुम्हें किसने हमारे हाथ-पैर तोड़ने के लिये भेजा था?
मेरा नाम मंगल दादा है और मुझे जग्गू उर्फ जगदीश ने ऐसा करने के लिये कहा था।

हुम्म! तो मेरा संदेह ठीक ही था।

सुनो पहलवान, फिलहाल तो हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को छोड़ दे रहे हैं, लेकिन यदि तुमने हमारे रास्ते में आइन्दा आने की कोशिश की तो तुम्हारी टांट पर एक भी बाल दिखाई नहीं देगा...

... और हां, अपने उस गुरुघण्टाल जग्गू को भी समझा देना कि वह अपने पाजामे में रहे, वरना हम उसकी भी ऐसी दुर्गति करेंगे कि वह किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगा। समझ गये।
ब... बिल्कुल समझ गया भाई।

तो चलो भागो और ओलम्पिक दौड़ दिखाओ।

तुरन्त मंगल दादा समेत सभी बदमाश फुर्ती के स
उठे और सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुये।

चलो बड़े भाई, अब हम भी चलें। शुक्र है, डिनर का मजा किर-किरा होने से बच गया।
ठीक कहते हो! आओ चलें।

चारों पुनः मोटर साइकिलों पर सवार हुये और देव के घर की ओर चल पड़े।

देव के घर पहुंचने पर देव के माता-पिता ने बड़े प्यार और ममतापूर्वक उन्हें भोजन कराया।
उसके बाद काफी रात गये राम-रहीम अपने घर लौट गये तथा आनन्द अपने घर।

ब-आनन्द और राम-रहीम नियमित रूप से स्कूल आते रहे। किन मंगल दादा की असफलता के कारण अब्बू अब उनसे न्नी काटने लगा था।
चलो, इसकी बुरी आदतों में तो सुधार हुआ। कम-से-कम अपनी गलती पर शर्मिन्दा तो है।
लेकिन बड़े भाई, हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि कुत्ते की दुम हमेशा टेढ़ी ही रहती है। हो सकता है, वह किसी दिन फिर हमसे बदला लेने की कोशिश करे।

यदि भविष्य में उसने फिर कोई ऐसी ओछी हरकत करने की कोशिश की तो मैं उसकी हड्डी-पसली एक कर दूंगा।
टन... टन... टन...
छोड़ो इन बातों को। आओ, अपनी क्लास में चलते हैं। आधी छुट्टी खत्म हो गई है।
और वे अपनी कक्षा की ओर बढ़ गये।

कुछ दिनों बाद एक दिन जब आनन्द ने स्कूल जाने के लिये अपनी मोटरसाइकिल गैराज से बाहर निकाली—
अरे! चचा गेंडाराम! चलो, यह भी खूब मौके पर आया!

अरे चचा, आज सुबह-सुबह हमारे यहां कैसे आना हुआ! खैरियत तो है?
बिल्कुल खैरियत है भतीजे! वैसे मैं बड़े साहब से मिलने आया हूं भतीजे! वे अन्दर तो हैं?

हां, वे भीतर हैं। लेकिन भीतर जाने से पहले मुझे मेरी फीस देते जाइये।
क्या मतलब?

मतलब यह मेरे प्यारे चचा कि आज मेरी हथेली फिर बुरी तरह खुजला रही है, जबकि जेब में एक धेला भी नहीं है।
नहीं, आज मैं तुम्हें एक धेला भी नहीं देने वाला...

...क्या तुम्हें एक पुलिस वाले से इस तरह पैसे मांगते शर्म नहीं आती...
...सुनो आनन्द यदि तुमने अपनी यह गंदी आदत नहीं छोड़ी तो मैं तुम्हारे डैडी से शिकायत कर दूंगा।

जरूर कर देना चचा, लेकिन उससे पहले यह बात आप भी अच्छी तरह सोच लेना कि जब उन्हें यह पता चलेगा कि आप ड्यूटी के समय किसी मजमे में सरे-आम मुर्गा बनकर अण्डा देते हैं तो वे आपके साथ किस तरह पेश आयेंगे।
क्याऽऽऽ?

त...तुम्हें इस बारे में कैसे मालूम हुआ?
हम अन्तर्यामी हैं चचा! दुनिया के इस महान् जादूगर से कुछ भी नहीं छिपा! हम तो यह भी बता सकते हैं कि उस व्यक्ति का पर्स तुम्हारी जेब तक कैसे पहुंचा?

आनन्द की बात सुनकर गेंडाराम चौंककर बुरी तरह उछला—
त... तुम? यानी तुम्हीं वह जादूगर, यानी मदारी थे।
बिल्कुल चचा, अब बताइये आप मेरी शिकायत करेंगे या मैं...

यार, धीरे बोल भतीजे! दीवारों के भी कान होते हैं।

तो निकालो जल्दी से मेरी फीस।
देता हूं, देता हूं मेरे बाप।

हाय! आज फिर गई रिश्वत की कमाई हाथ से। इस मनहूस की तो शकल का दिखाई देना ही मेरे लिये अप-शकुन साबित होता है।

यह लो अपनी फीस दो सौ रुपये, लेकिन कम-से-कम इतना तो बता दो भतीजे कि उस व्यक्ति का पर्स मेरी जेब में कैसे पहुंच गया था।
जरूर! जरूर बतायेंगे चचा!
रुपये लेकर आनन्द ने जेब में ठूंसे...

...और अपनी मोटरसाइकिल पर सवार होकर बोला–
अण्डे दिखाते समय मैंने ही वह पर्स उस व्यक्ति की जेब से पार किया था...

... और बड़ी सफाई से तुम्हारी जेब तक पहुंचा दिया था...

हाय! मेरा पर्स!

...अब आई चचा तुम्हारी समझ में सारी बात। अच्छा, स्कूल पहुंचने में मुझे देर हो रही है। मैं चलता हूं!
हे ईश्वर! यह छोकरा है या शैतान का बाप।

स्कूल पहुंचकर जब आनन्द ने वह बात राम-रहीम और देव को सुनाई तो वे सब खूब दिल खोलकर हंसे।
हा-हा-हा!
बस-बस यारो, अब हंसना बंद करो और क्लास में चलो।
और चारों अपनी कक्षा की ओर बढ़ गये।

लेकिन उसी रात जब देव अपने कमरे में गहरी नींद सोया हुआ था—
आ... ई... ई... ई...

उस तेज चीख को सुनकर उसकी नींद खुल गई।
ओह! यह किसकी चीख थी? अरे, कहीं...!
और एक भयानक विचार के मस्तिष्क में आते ही..

... वह बिस्तर से उतरकर अपने माता-पिता के कमरे की ओर दौड़ पड़ा।
मां-पिताजी!

और जैसे ही वह अपने माता-पिता के कमरे में प्रविष्ट हुआ—
पिताजी...!
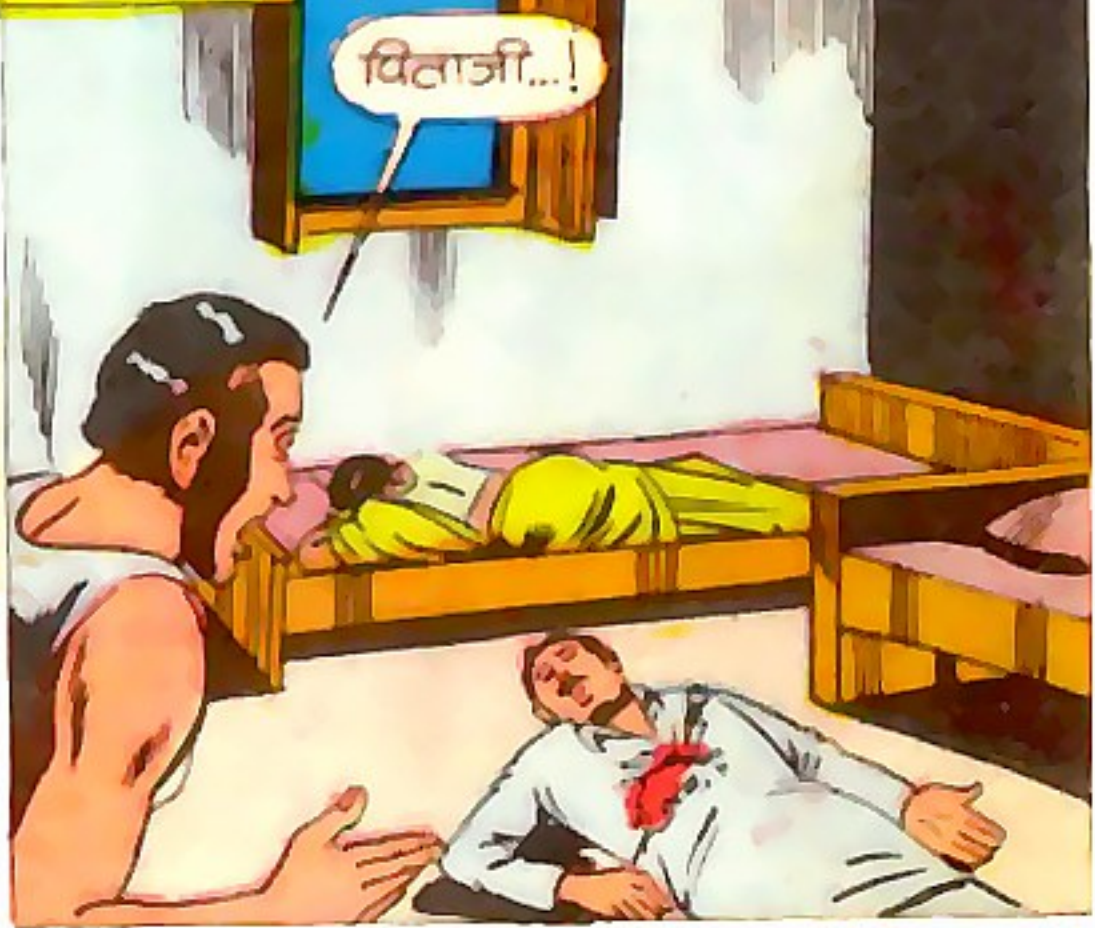
तभी उसकी दृष्टि एक तरफ बिछे पलंग पर पड़ी और उसके कंठ से एक बार फिर भयानक चीख फूट पड़ी।
मां...!

मां... मां, तुम्हें क्या हो गया है। मां! तुम बोलती क्यों नहीं? बोलो न मां, तुम्हारा और बापू का यह हाल किसने किया?

लेकिन—
ओह! मां तो बेहोश है।

देव तुरन्त अपने पिता के पास पहुंचा।
ओह ! सांस चल रही है। पिताजी अभी जीवित हैं।

पिताजी, होश में आइये पिताजी! मुझे बताइये मां की और आपकी यह हालत किसने की है? मैं उस कुत्ते का खून पी जाऊंगा।

शीघ्र ही—
आह! प...पा...नी!
अभी लाया पिताजी!

देव ने तुरन्त उठकर निकट रखे जग से एक गिलास में पानी उड़ेला...

...और—
लीजिये, पानी पीजिये पिताजी। हां-हां, हिम्मत करिये।
अ...आह!

कुछ घूंट पानी के पश्चात् देव के पिता की हालत में कुछ सुधार हुआ—

बेटा देव... अ...च्छा... हु...आ... तू...तुम...स...समय ... रहते... आ... पहुंचे... मैं... मैं...।

हां-हां, बोलिये पिताजी। मुझे बताइये आप लोगों की यह दशा किस कुत्ते ने की है और क्यों की है?

य... यह... वक्त उत्तेजित होने या भावनाओं में ब...हने का नहीं है बेटा... म...मेरा अंतिम... समय...क... रीब है, इसलिये मेरी ब... बात ध्यान से... सु... नो...!

ऐसा न कहिये पिताजी! इतने वर्षों बाद ईश्वर ने एक बार फिर से हमें आपका साया दिया है। आप हमें इस तरह अकेला छोड़कर नहीं जा सकते। बू...हू...हू...हू...!

हैं! यह तो मोम की गुड़िया है।

इस गुड़िया को लेकर मेरे पास आओ बेटे।

स... सुनो... ब...बेटा ... यह मोम की... गुड़िया... ब... बहुत दुर्लभ है। इ... इसे... सम्भा... लकर... र... खना। क...किसी को भी इस गुड़िया के... ब...बारे में... म...मत... ब... बताना... य... यह...एक... ख... जा...!

शम्भू अपनी बात पूरी नहीं कर पाया और उसकी गर्दन एक तरफ को ढुलक गई।
बापू!!!
हू... हू... हू... हू...!

कुछ देर विलाप करने के पश्चात् सहसा देव ने अपने आंसू पोंछ लिये।
सबसे पहले मुझे इस गुड़िया को सम्भालकर रख देना चाहिये। उसके बाद आनन्द को फोन करना चाहिये। वही इस विपत्ति में मेरी मदद कर सकता है।

देव के फोन के कुछ ही देर बाद आनन्द उसके घर पहुंचा।
आनन्द भइया, अच्छा हुआ तुम आ गये। किसी जालिम ने हमारे घर की खुशियां लूट लीं। हू... हू... हु... हु...!
हिम्मत से काम लो देव और मुझे बताओ कि आखिर हुआ क्या है? फोन पर तुमने कुछ बताया ही नहीं।

मेरे पिता का किसी ने खून कर दिया है और मां बेहोश पड़ी है।
यह तुम क्या कह रहे हो देव?

मैं ठीक कह रहा हूं आनन्द! आओ, भीतर चलकर अपनी आंखों से देख लो।
चलो।

भीतर पहुंचकर-
मर चुके हैं? हे ईश्वर, यह तूने देव और इसकी मां पर कैसा जुल्म किया? क्षणभर की खुशियां देकर उन्हें फिर वापस छीन लिया।
मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा आनन्द भइया कि मैं क्या करूं और क्या नहीं?

घबराने या दुखी होने से काम नहीं चलेगा देव! इन परिस्थितियों का सामना तुम्हें हिम्मत से करना होगा।

देव को सांत्वना देते हुये आनन्द ने कमरे में चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई।
ओह! सारा सामान बेतरतीबी से फैला हुआ है, जैसे खूनी ने यहां की तलाशी ली हो...
???

...शायद उसे किसी विशेष वस्तु की तलाश थी और अपनी तलाशी में तुम्हारे पिता को रुकावट बनते देख उसने उन्हें खत्म कर दिया होगा...
???

...क्या तुम बता सकते हो कि उस खूनी को किस विशेष वस्तु की तलाश थी? शायद उस वस्तु के बारे में अंकल ने कभी तुमसे जिक्र किया हो?
हां, एक मोम की गुड़िया है, जिसे मरने से पहले पिताजी ने मुझे सम्भालकर रखने के लिये कहा था।

कहां है वह गुड़िया?
अभी लाता हूं।
कहकर देव अपने कमरे में गया...

...और वह गुड़िया ले आया। आनन्द ने उसे उलट-पुलटकर देखा।
मुझे तो इस गुड़िया में कोई विशेष बात नजर नहीं आती। मात्र साधारण-सी मोम की गुड़िया है...

...खैर, फिलहाल इस गुड़िया को सुरक्षित रख दो। बाद में मैं इसका फिर परीक्षण करूंगा।
ठीक है।
शीघ्र ही देव गुड़िया को वापस अपने कमरे में रख आया। तभी–
आह!
ओह! आंटी को होश आ रहा है।
मां... मां तुम कैसी हो? आंखें खोलो मां और हमें बताओ कि यह सब कैसे हुआ?
आह... मैं कहां हूं?
आप अपने घर में ही हैं आंटी!
सरस्वतीदेवी शीघ्र ही पूरी तरह से होश में आ गई।
देव, तुम्हारे पिता कैसे हैं और वह शैतान तो चला गया न?
वही तो हम तुमसे पूछना चाहते हैं मां कि कौन था वह शैतान, जिसने पिताजी का खून किया है?
क्या कहा SSS उस शैतान ने तुम्हारे पिता का खून कर दिया?

हां मां, वह देखो। वह रही उनकी लाश।
नहीं...।

आह!
मां... मां... त... तुम ठीक तो हो न...।
आंटी जी, हिम्मत से काम लीजिये।

लेकिन सरस्वतीदेवी चारपाई पर लुढ़क गई।
ओ नो, आण्टी ने तो दम तोड़ दिया है।
नहीं...।

हिम्मत से काम लो देव! ईश्वर को शायद यही मंजूर था।
ठीक कहते हो आनन्द! आखिर ईश्वर भी तो शैतान का साथी है। उसे भला बेगुनाह, शरीफ और दुखी इंसानों से क्या लेना-देना? उसका कहर तो हमेशा से हम जैसे गरीबों पर ही टूटता रहा है।

ऐसा नहीं कहते देव!
ऐसा न कहूं तो तुम्हारे उस दयालु भगवान के लिये क्या कहूं आनन्द, जिसके पत्थर दिल ने हंसते-हंसते मेरी खुशियों से आंखें मूंद लीं। किसी शैतान को खुश करने के लिये हमारे छोटे से परिवार को उजाड़ दिया...

...बोलो आनन्द, मैंने और मेरे माता-पिता ने ऐसे कौन से पाप किये थे, जिनकी उसने हमें इतनी कठोर सजा दी? आज मुझे विश्वास हो गया है, कि मूर्खों व धर्मभीरुओं का वह भगवान वास्तव में शैतान का सगा भाई है।
देव!

लेकिन देव अपनी ही रौ में बोले जा रहा था—
और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारे उस कथित भगवान के वे शैतान भाई कौन हैं...
???

...वे मंगल दास और जग्गू हैं, जिन्होंने मेरे माता-पिता का खून किया है...

... मैं उन्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा आनन्द, जिंदा नहीं छोड़ूंगा।
देव! मेरे भाई! रुक तो सही!
लेकिन देव पर आनन्द की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। घर से बाहर निकलकर वह बिजली की-सी तेजी के साथ आनन्द की मोटरसाइकिल पर सवार हुआ और–
मैं कहता हूं रुक जाओ देव! तुम्हारे माता-पिता को पहले तुम्हारे हाथों अग्नि की जरूरत है, फिर अपने हत्यारे से बदले की। रुक जाओ देव। ईश्वर के लिये रुक जाओ।
परन्तु देव नहीं रुका।
उफ! चला गया! कहीं वह जोश में कोई गलत कदम न उठा बैठे। समझ में नहीं आता कि पहले उसके पीछे जाऊं या अंकल-आंटी के अंतिम संस्कार का प्रबंध करूं।
फिर कुछ सोचकर–
पहले मुझे चचा गेंडाराम को फोन करना चाहिये, ताकि वह शम्भु अंकल के खून की कार्यवाही पूरी कर सकें। फिर आगे क्या करना है, यह बाद में सोचा जायेगा।